1857 ई0 के विद्रोह में टेलीग्राफ की भूमिका : एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ० ज्ञानेश कुमार धुरिया*

भारतवर्ष के संपूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य की नींव तक हिला कर रख देने वाले 1857 ई0 के विद्रोह में टेलीग्राफ ने अंग्रेजों के लिए एक सशक्त हथियार के रूप में कार्य किया। यद्यपि इससे पूर्व भी यूरोप व क्रीमिया में हुई लड़ाईयों में इसका प्रयोग किया गया था, परन्तु भारत में हुए विद्रोह की तुलना में इतना व्यापक नहीं। टेलीग्राफ की मदद से ही इस विद्रोह को दबाने हेतु बड़े पैमाने पर सीलोन, फारस, सिंगापुर, बर्मा से सेना बुलाई गई, इसी की मदद से विद्रोही गतिविधियों पर नजर रखी जाती थी और उचित फैसले लिए जाते थे। पंजाब के तत्कालीन ज्यूडीशियल कमिश्नर रॉबर्ट मांटगोमरी का यह कहना कि इलेक्ट्रिक टेलीग्राफ ने हमें बचा लिया, विद्रोह के दौरान टेलीग्राफ की महत्ता को स्पष्ट करता है।

सैनिक, किसान, बेदखल किये गए राजघराने, रईसों आदि के असन्तोष से उत्पन्न इस विद्रोह की सर्वप्रथम खबर 10 मई, 1857 को सरकार के पास आगरा में मेरठ के एक गैर–सरकारी टेलीग्राफ के संदेश के माध्यम से पंहुची। दूसरे दिन दो तार दिल्ली से अंबाला भेजे गए, ताकि वहां से समस्त छावनियों को सतर्क करने का संदेश जारी हो सके। चूँकि मेरठ के बागियों द्वारा दिल्ली से दक्षिण की सभी लाइनें ध्वस्त कर दी गई थीं, इसलिए दिल्ली से उत्तर की छावनी से ही सम्पर्क किया जा सकता था। यद्यपि इन दो तारों को भेजने के बाद ही दिल्ली का पूरे भारत से संपर्क टूट किया गया था, परन्तु फिर भी ये दो तार काफी काम आए, जिनमें भारतीय सैनिकों के विद्रोह, यूरोपीय सैनिकों व टेलीग्राफ ऑपरेटरों की हत्याओं, लूटपाट आदि की खबरें थी। जिसके चलते देश के दूसरे हिस्से में भारतीय सैनिकों तक विद्रोह की खबर पहुँचने से पूर्व अंग्रेजों को अपनी सेना को सावधान करने का समय मिल गया। पंजाब की कुछ छावनियों में 13 मई की शाम को विद्रोह करने की योजना बनाई गई थी, परन्तु जब 12 मई की सुबह तार के माध्यम से विद्रोह की खबर वहां पंहुच गई, तो अंग्रेज सतर्क हो गए और जिन भारतीय रेजीमेंटों पर उन्हें शक था, उनको निःशस्त्र कर दिया गया व सरकारी खजाने को सुरक्षित स्थानों पर पंहुचा दिया गया। दिल्ली से संदेश वाहक के माध्यम से खबर पंहुचने से पूर्व ही वहां निगरानी प्रारम्भ कर दी गई, जिसके चलते पंजाब में मामूली चिंगारी ही भड़क पाई और सम्पूर्ण विद्रोह के दौरान पंजाब लगभग शान्त ही रहा। टेलीग्राफ ने यहां पर विद्रोह शान्त रखने व भारतीय सैनिकों को समय रहते निःशस्त्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

14 मई को दिल्ली पर अंग्रेजी नियंत्रण छूटने की खबर आगरा से कलकत्ता भेजी गई। तत्काल कलकत्ता की भारत सरकार ने शिमला में तैनात कमान्डर–इन–चीफ, पंजाब के चीफ कमिश्नर, आगरा के लेफ्टिनेंट गर्वनर व मद्रास की सरकार को दिल्ली व कलकत्ता हेतु तुरन्त सैनिक भेजने के लिए तार प्रेषित किए। इस प्रकार सरकार दिल्ली के बारे में देश भर के भारतीय सैनिकों तक सूचना पंहुचने से पहले ही स्थिति से निबटने के लिए तैयार हो गई।

विद्रोह के प्रथम सप्ताह में क्षेत्रीय अंग्रेज अधिकारियों ने यूरोपीय सेनाओं को भेजने हेतु तार के माध्यम से अनुरोध किया। आगरा के लेफ्टिनेंट गर्वनर द्वारा फारस की खाड़ी से लौटती सेना को कलकत्ता भेजने का अनुरोध किया गया। अवध के चीफ कमिश्नर द्वारा चीन व सीलोन से तथा नेपाल से गोरखा सैनिकों को बुलाने का अनुरोध किया गया। भारत से बाहर की यूरोपीय सेनाओं की आवश्यकता पर सबसे अधिक बल 17 मई को भेजे गए तार द्वारा मद्रास में तैनात कमान्डर–इन–चीफ ने दिया। उसने चीन पर दबाव डालने के उददेश्य से भेजी गई सेना को तत्काल कलकत्ता भेजने की सिफारिश की। उसके अनुसार इस सेना के आने से अंग्रेजों का उत्साहवर्धन होगा।

तार के माध्यम से किए गए उसके अनुरोध पर त्वरित कार्यवाई की गई। 16 से 29 मई के मध्य कलकत्ता में गवर्नर जनरल, बम्बई–मद्रास के गवर्नर, उत्तर–पश्चिम के लेफ्टिनेंट गवर्नर व पंजाब के चीफ–कमिश्नर के बीच तारों के आदान–प्रदान के फलस्वरूप सैनिकों को भारी मात्रा में इधर–उधर तैनात किया जा सका। फारस से लौटती दो रेजीमेंट कलकत्ता और फिर वहां से दिल्ली भेजी गई। चीन जा रही सेना सिंगापुर से ही लौटा दी गई। इनमें सबसे महत्वपूर्ण थी 23वीं इंजीनियर्स रेजीमेंट, जो सितम्बर 1857 से पूरे विद्रोह के दौरान सक्रिय रही।

इस प्रकार 1857 के अंत तक, जब तक उत्तर व मध्य भारत में विद्रोह नही फैला था, ब्रिटिश सेना अत्यधिक मजबूती के साथ तैनात हो चुकी थी। इस दौरान नौकाचालन की अनुकूलता, अपर्याप्त संख्या में स्टीमरों का समन्वय, स्टीमरों की उपलब्धता न होने पर नौकाओं की व्यवस्था जैसी समस्याओं का निबटारा तार व्यवस्था के माध्यम से शीघ्र किया जा रहा था, क्योंकि जून व जुलाई के महीने तक विद्रोह बनारस, इलाहाबाद, कानपुर, फतेहपुर, आगरा, नीमच, ग्वालियर, सिपरी,

*एम० ए० (स्वर्ण पदक), पी–एच० डी० (पाश्चात्य इतिहास)

इन्दौर, दानापुर, अलीगढ़, मैनपुरी व उत्तर तथा मध्य भारत में लगभग प्रत्येक स्थान पर फैल चुका था और ऐसे में किसी भी प्रकार की देरी अंग्रेजी साम्राज्य को उखाड़ फेंकती। यूरोपीय सेनाओं के तेजी से पहुँचने के कारण यह अफवाह फैल गई कि ब्रिटेन से एक लाख सैनिक आ रहे हैं। विद्रोहियों पर इसका अधिक मानसिक दबाव पड़ा, जिससे अंग्रेज लाभान्वित हुए।

विद्रोह के दौरान टेलीग्राफ ने नीति–निर्धारण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत जैसे विशाल भू–भाग पर हुए विद्रोह की अवस्था में समस्त राज्यों में उलझन की स्थिति बन गई। ऐसी स्थिति में स्थानीय अधिकारियों को मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ी। इसी बीच 2 जुलाई को लखनऊ के बेलीगारद पर मौलवी अहमद उल्ला शाह के नेतृत्व में विद्रोहियों ने हमला कर हेनरी लॉरेंस को मार गिराया, जबकि कैप्टन विल्सन घायल हुआ। जिसके चलते अवध के चीफ कमिश्नर ने टेलीग्राफ के माध्यम से सन्देश भेजकर पूर्ण सैनिक अधिकार की मांग की और गवर्नर जनरल ने तार के माध्यम से ही तत्काल स्वीकृति प्रदान करी। इसी प्रकार उत्तर–पश्चिम प्रान्तों के लेफिटनेंट गवर्नर द्वारा राजपूताना जिला एजेंटों पर पूर्ण नियन्त्रण की मांग को भी मंजूरी दी गई। टेलीग्राफ के ही माध्यम से समस्त लेफ्टिनेंट–गवर्नरों को भारतीय अधिकारियों एवं सैनिकों के कोर्ट मार्शल व फांसी की सजा देने के अधिकार प्रदान किये गए।

टेलीग्राफ चूंकि पूर्ण रूप से सरकार के नियन्त्रण में था, इसलिए इसके अधिकतर सिग्नलर व इंस्पेक्टर ब्रिटिश अथवा ऐंग्लों–इंडियन मूल के थे। जातियों एवं धार्मिक कारणों के चलते ये कर्मचारी सरकार के प्रति वफादार थे। साथ ही विद्रोहियों में ऐसा कोई नहीं था, जो टेलीग्राफ द्वारा सिग्नल भेजना जानता हो। कुछ विद्रोही ही अंग्रेजी भाषा का ज्ञान रखते थे और भारतीय भाषा में टेलीग्राफ संकेत नही था, इस प्रकार विद्रोहियों के लिए भाषा की समस्या थी, जिसके चलते अपने कब्जे में आयी टेलीग्राफ लाइनों का वे कोई उपयोग नही कर सकते थे, मात्र उन्हें नष्ट कर सकते थे। आगरा से इन्दौर 400 मील लम्बी, आगरा से कानपुर की 180 मील लम्बी टेलीग्राफ की लाइनों को विद्रोहियों ने तोड़ दिया, खम्भों का उपयोग ईंधन के रूप मे किया और धातु के तारों को काटकर बुलेट बना लिया अथवा उसे टेलीग्राफ के इस्तेमाल के लिए पूर्णतया अनुपयोगी बना दिया।

विद्रोहियों को टेलीग्राफ प्रणाली से खतरे का आभास तब हुआ, जब विद्रोह की खबर 10 मई को मेरठ से जारी की गई। इसलिए जब विद्रोही दिल्ली की ओर बढ़े, मेरठ और दिल्ली–आगरा के मध्य की लाइनों को नष्ट कर दिया। यद्यपि आगरा से होती हुई मेरठ–कलकत्ता की लाइन 16 से 18 मई के बीच कुछ समय के लिए क्रियान्वित हुई व इससे महत्वपूर्ण जानकारियों का भी आदान–प्रदान हुआ, परन्तु 18 मई को यह संचार पुनः बाधित हो गया। विकल्प के तौर पर अलीगढ़ में एक केन्द्र खोला गया, परन्तु यह केन्द्र भी बहुत मुश्किल से 10 दिनों तक ही चल सका, परन्तु इस अवधि में यूरोपीय लोगों को हाथरस पहुँचा दिया गया, शीघ्र ही मेरठ लाइन पूर्ण रूप से नष्ट कर दी गई।

कानपुर, इलाहाबाद व बनारस में जून के प्रारम्भ में विद्रोह की आग भड़क चुकी थी और विद्रोहियों ने टेलीग्राफ लाइन को पूरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया था। कानपुर व लखनऊ के बीच की लाइनों को तात्या टोपे की सेना ने नष्ट कर दिया। अंग्रेजों द्वारा इस लाइन पर काम तभी हो पाया, जब कैम्पबेल की सेना आगे बढ़ी। द टाइम्स के जाने–माने संवाददाता डब्ल्यू. एच. रसेल, जो कि उस समय कैम्पबेल के सैन्य अभियानों पर नजर रखे थे, ने लिखा कि विद्रोही आक्रमण कर के टेलीग्राफ के तारों के टुकड़े–टुकड़े कर देते थे, जो कि अंग्रेजों के प्रति टेलीग्राफ के महत्व को दर्शाता है।

यद्यपि डॉ0 विलियम ब्रूक ओ' शाघ्नेस्सी, जो कि 1839 से ही तार प्रणाली के उम्दा प्रयोग के लिए विश्व प्रसिद्ध थे, इस बात से अवगत थे कि फ्राँस आस्ट्रिया व इटली में विद्रोह के समय विद्रोही नेताओं ने टेलीग्राफ लाइनों को नष्ट करना अपना प्रथम लक्ष्य बनाया था, परन्तु उनका मानना था कि टेलीग्राफ पर स्थानीय गड़बड़ी का प्रभाव नही पड़ता है। सम्भवतः वे इस बात से आश्वस्त थे कि 1855 में हुए संथाल विद्रोह के दौरान यद्यपि रेलवे लाइन नष्ट कर दी गई, परन्तु टेलीग्राफ लाइनें सुरक्षित थीं। उन्होंने अपनी मान्यता 1856 में लन्दन कोर्ट और फिर अरब क्षेत्र में प्रस्तावित इण्डो–यूरोपीय टेलीग्राफ लाइन की सुरक्षा हेतु गठित संसदीय समिति के समक्ष प्रस्तुत की। परन्तु जैसे ही टेलीग्राफ का उपयोग सैन्य गतिविधियों से जुड़ा, उनकी मान्यता गलत सिद्ध हो गयी।

स्थानीय जनता ने भी विद्रोहियों का साथ देने के उद्देश्य से टेलीग्राफ लाइन को तोड़ने में दिलचस्पी दिखायी, जिसका विवरण भोपाल की बेगम व उनके मुंशी के बीच हुए पत्र–व्यवहार से स्पष्ट होता है । टेलीग्राफ के खतरे से विद्रोही सचेत थे, यह इस बात से ही पता चल जाता है कि बार–बार टेलीग्राफ लाइनों को ठीक करने के बाद भी वो तोड़ दी जाती थीं। एडविन अर्नोल्ड द्वारा उल्लिखित फांसी पर चढ़ते हुए एक बागी का टेलीग्राफ के तार की ओर देखते हुए यह कहना कि यही वह जघन्य तार है, जो मेरा गला घोंटने जा रहा है, विद्रोहियों के लिए टेलीग्राफ की भयावहता को प्रकट करने का उत्कृष्ट उदाहरण है।

सन्दर्भ –

1 कोल्डस्ट्रीम, विलियम (संपा.) (1902), रेकॉर्ड्स ऑफ द गवर्नमेंट ऑफ नॉर्थ–वेस्ट प्रोविंसेज ऑफ इण्डिया ड्यूरिंग द म्यूटिनी ऑफ 1857, टी. एंड टी. क्लार्क, एडिनबर्ग, पृ0 891
2 सिंह, डॉ. ए.ए., अवध ताल्लुकेदार्स एण्ड रेवोल्ट ऑफ 1857, रिसर्च जर्नल ऑफ द मेरठ यूनिवर्सिटी हिस्ट्री अलुम्नाई, वॉल्यूम– XXI , नं.– II , 2013, पृ0 77
3 पार्लियामेंट्री पेपर्स ऑन म्यूटिनीज इन द ईस्ट इंडीज (1857), भाग– II, सीरीज– VI, लन्दन, पृ0 175
4 डिस्क्रिप्टिव लिस्ट ऑफ म्यूटिनी पेपर्स इन द नेशनल आर्काइव्स ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1960–63, फाइल– I, पृ0 35
5 गुप्ता, डॉ. नवीन, 1857 की क्रान्ति के फकीर – मौलवी अहमद उल्लाशाह की हत्या का रहस्य, रिसर्च जर्नल ऑफ मेरठ यूनिवर्सिटी हिस्ट्री अलुम्नाई, वॉल्यूम– XXI, नं.– II, 2013, पृ0 88
6 टेलीग्राफ डिपार्टमेंट रिपोर्ट, 1855–56
7 वही, 1855–56
8 गोल्डस्मिथ, एफ. जे. (1874), टेलीग्राफ एंड ट्रैवेल, मैकमिलन, लन्दन
9 ओ' शाघ्नेस्सी, डब्ल्यू. बी., मेमोरेंडा रेलेटिव टू एक्सपेरीमेंट्स ऑन द कम्यूनिकेशन ऑफ टेलीग्राफ सिग्नल्स बाई इंड्यूस्ड इलेक्ट्रिसिटी, जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, 8 (1839), पृ0 714–31
10 आर्नोल्ड, एडविन (1865), द मार्क्वीज ऑफ डलहौजीस एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ ब्रिटिश इण्डिया, सांडर्स, ओटले एंड कं., लन्दन, पृ0 244